

Padma Shri



SHRI MAHABIR NAYAK

Shri Mahabir Nayak is a traditional Nagpuri folk singer from Jharkhand.

2. Born on 24th September, 1942 in a rural family in Uruguttu Village, Ranchi, Shri Nayak did his schooling from village Uruguttu and further Intermediate, ITI, CTI. He got Government Job in 1963 in HEC as a worker and retired in 2001. But he never gave up his art of traditional folk singing. In his journey as a traditional folk singer, he gave more than 62 years in his passion and love for Nagpuri folk song, poet and literature and is still working with Jharkhand Art and Culture Department as an Advisor in Committee and giving his best to various Art and cultural groups in Jharkhand. He used to perform the Folk song in fair, jatra mela, festivals like Sarhul etc. and whenever he got the opportunity. He worked with various organizations and NGOs in Jharkhand related to Jharkhand Traditional Art and Culture, organizations like Chottanagpur Sanskritik Sangh, Kunjwan, Nagpuri Kala Sangam.

3. Shri Nayak has been giving stage performance since 1960. In Hatia village, he started stage programme for tradition folk song and Kavi Sammelan where various artists performed their art of singing, dance and music. Later on, he used to perform stage programme in Jagannath Fair in Dhurwa, Ranchi every year. He also performed stage programme in different states of India like Orissa, Bihar, West Bengal, Delhi and various places of Jharkhand. In 1992, he and his group of 20 members performed an international programme in Taipei, Taiwan.

4. Shri Nayak is the co-founder of Kunjwan. He also worked as Editor in Dahar Magazine, Kala Sangam, Nagpuri Kala Sangam. He worked in Ranchi Doordarshan Kendra, All India Radio from 1977 to 2011. He is also helping Ph.D. scholars in Nagpuri Languages and Literature. He also writes song for Jharkhand Movement "Mil ke chalu nawjawan re, har ghadi rahu savdhaan". He served as Editor, Advisor and support member in Kunjwan, Chottanagpur Sanskritik Sangh, Nagpuri Samaj Sewa Sansthan, Nagpuri Bhasha Parishad. He published his poetry, songs in various magazines. Most of the 300 traditional folk songs in his poetry have been published in books and magazines.

5. Shri Nayak has received various awards and honors from various organization including Jharkhand Vibhuti Samman by Chotanagpur Sanskritik Sansthan Ranchi in 2009; Doordarshan Samman by Ranchi Doordarshan Kendra Ranchi, Jharkhand in 2011; Swarn Samman by Nagpuri Sansthan, Pithoria, Ranchi and Lok Kalratna Award by Ministry of Art and Culture NCZCC Allahabad in 2014; Praful Award by Nagpuri Bhasha Parishad, Ranchi in 2019; Jharkhand Ratna Award by Lok Sewa Samiti, Ranchi in 2021 and National Award - Sangeet Natak Akademy 'Amrit Award' in 2023.



श्री महाबीर नायक

श्री महाबीर नायक झारखंड से पारंपरिक नागपुरी लोक गायक हैं।

2. 24 सितंबर, 1942 को रांची के उरुगुडू गांव में एक ग्रामीण परिवार में जन्मे, श्री नायक ने अपनी स्कूली शिक्षा उरुगुडू गांव से प्राप्त की और उसके बाद इंटरमीडिएट, आईटीआई, सीटीआई की शिक्षा प्राप्त की। वर्ष 1963 में उन्हें एचईसी में एक कर्मचारी के रूप में सरकारी नौकरी मिली और वर्ष 2001 में वह सेवानिवृत्त हुए। लेकिन उन्होंने पारंपरिक लोक गायन की अपनी कला को कभी नहीं छोड़ा। एक पारंपरिक लोक गायक के रूप में अपने सफर में उन्होंने नागपुरी लोकगीत, कवि और साहित्य के प्रति अपने जुनून और प्रेम को 62 वर्ष से अधिक समय दिया और अभी भी वह झारखंड कला और संस्कृति विभाग के साथ समिति में सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं और झारखंड के विभिन्न कला और सांस्कृतिक समूहों को अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग दे रहे हैं। वह मेले, जात्रा मेला, सरहुल जैसे त्योहारों और जब भी उन्हें मौका मिलता, लोकगीत प्रस्तुत करते थे। उन्होंने झारखंड में झारखंड पारंपरिक कला और संस्कृति से संबंधित विभिन्न संगठनों और गैर सरकारी संगठनों जैसे छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, कुंजवन, नागपुरी कला संगम संगठनों के साथ काम किया।

3. श्री नायक वर्ष 1960 के बाद से ही मंचीय प्रस्तुतियाँ दे रहे हैं। हटिया गाँव में उन्होंने पारंपरिक लोकगीत और कवि सम्मेलन के लिए मंचीय कार्यक्रम शुरू किए, जहाँ विभिन्न कलाकारों ने गायन, नृत्य और संगीत की अपनी कला का प्रदर्शन किया। बाद में वह हर वर्ष रांची के धुर्वा में जगन्नाथ मेले में मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे। उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों जैसे उड़ीसा, बिहार, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और झारखंड के विभिन्न स्थानों पर भी मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए। वर्ष 1992 में, उन्होंने और उनके 20 सदस्यों के समूह ने ताइपे, ताइवान में एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

4. श्री नायक कुंजवन के सह-संस्थापक हैं। उन्होंने दहर पत्रिका, कला संगम, नागपुर कला संगम में संपादक के रूप में भी काम किया। उन्होंने वर्ष 1977 से 2011 तक रांची दूरदर्शन केंद्र, ऑल इंडिया रेडियो में काम किया। वह नागपुरी भाषा और साहित्य में पीएचडी करने वाले छात्रों की मदद भी कर रहे हैं। वे झारखंड आंदोलन के लिए गीत भी लिखते हैं—“मिल के चलहु नवजवान रे, हर घड़ी राहु सावधान”। उन्होंने कुंजवन, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, नागपुरी समाज सेवा संस्थान, नागपुरी भाषा परिषद में संपादक, सलाहकार और सहायक सदस्य के रूप में काम किया। उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं में अपनी कविताएँ, गीत प्रकाशित किए। पुस्तकों और पत्रिकाओं में उनकी कविताओं के 300 से अधिक पारंपरिक लोकगीत प्रकाशित हुए।

5. श्री नायक को वर्ष 2009 में छोटानागपुर सांस्कृतिक संस्थान रांची द्वारा झारखंड विभूति सम्मान, वर्ष 2011 में रांची दूरदर्शन केंद्र रांची, झारखंड द्वारा दूरदर्शन सम्मान; वर्ष 2014 में नागपुरी संस्थान पिठोरिया, रांची द्वारा स्वर्ण सम्मान और कला एवं संस्कृति मंत्रालय एनसीजेडसीसी इलाहाबाद द्वारा लोक कलारत्न पुरस्कार; वर्ष 2019 में नागपुरी भाषा परिषद, रांची द्वारा प्रफुल्ल पुरस्कार; वर्ष 2021 में लोक सेवा समिति, रांची द्वारा झारखंड रत्न पुरस्कार और वर्ष 2023 में राष्ट्रीय पुरस्कार — संगीत नाटक अकादमी 'अमृत पुरस्कार' सहित विभिन्न संगठनों से विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।